Dainik Bhaskar e-Paper Rajasthan | Punjab | Haryana | Madhya Pradesh | Jharkhand | Chhattisgarh - Mozilla Firefox
epaper.bhaskar.com/detail/?id=761585&boxid=854114500&ch=cph&map=map&currentTab=tabs-1&pagedate=08/05/2016&editioncode=181&pageno=5&view=image
dainikbhaskar.com
Published on 05 Aug-2016

बीमारियों को कंट्रोल करेगा ब्लैक, पर्पल और ब्लू गेहूं

'एंटी ऑक्सीडेंट्स' गुणों वाला पहला अनाज, गेहूं की किस्में तैयार की हैं नाबी ने

ननु त्रेगिंदर सिंह | चंडीगढ़

डॉ. मोनिका गोयल

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार भारत में हर साल कुपोषण से मरने वाले पांच साल से कम उम्र वाले बच्चों की गिनती 10 लाख से भी अधिक है। ये आंकड़े आने वाले वक्त में कम हो सकते हैं। नेशनल एग्रीफूड बायोटेक्नोलॉजी (नाबी) की ओर से तैयार ब्लू, पर्पल और ब्लैक गेहूं इन आंकड़ों को बदलने की क्षमता रखता है।

डॉ. मोनिका गोयल की ओर से तैयार गेहूं की इस नई किस्म में आम गेहूं के मुकाबले आयरन 60 फीसदी ज्यादा है, जिंक 35 फीसदी और इसमें 'एंटीऑक्सीडेंट' भी हैं। अब तक 'एंटीऑक्सीडेंट' का एकमात्र स्रोत फल को ही माना जाता है। जापान के जंगली नदीन और भारतीय गेहूं की किस्मों को मिला कर तैयार की गई इस किस्म से उन्होंने रोटी, चावल, ब्रेड और कुलचा भी तैयार किया है।

इसकी चपाती का रंग कुट्टू के आटे की रोटी-सा है लेकिन स्वाद सामान्य। नाबी की लैब ही नहीं केलांग (हिमाचल) और चप्परचिड़ी (मोहाली) में इसके फील्ड ट्रायल भी सफल रहे हैं। यूएस के जनरल सीड ऑफ साइंस ने इसे अप्रूव किया है।

जापान में पीएचडी करके लौटीं डॉ. गोयल ने जापान और यूएस से कुछ प्लांट मटीरियल मंगवाया जिससे क्रॉस ब्रीडिंग (दो किस्मों को मिलाना) की। इन किस्मों को मिला कर उन्होंने केलांग में क्रास ब्रीडिंग की, जिसका नतीजा अच्छा निकला हालांकि प्रोडक्शन कम थी। उन्होंने एक फसल हिमाचल और

ये हैं खासियत

इसमें जिंक की मात्रा 35 परसेंट और आयरन की मात्रा 60 परसेंट ज्यादा है। इस गेहूं के सब डॉ. गोयल और उनके सबी साइंटिस्ट ने चूहों पर रिसर्च की है। इस रिसर्च के नतीजे बताते हैं कि इसमें एंटी डायबिटीज, एंटी कोलेस्ट्रॉल और एंटी इनफ्लेमेटरी क्वालिटीज हैं। इसमें एंथोसाइनियन है जो एंटीऑक्सीडेंट है। एलडीएल ऑक्सीडेशन को रोकता है, इससे शरीर में विटामिन सी का स्तर भी सुधरता है। डॉ. गोयल ने बताया कि ब्लैक गेहूं के रिजल्ट सर्वोत्तम हैं।

दूसरी किस्म पंजाब में लेने का काम जारी रखा। अब वह नौवीं जेनरेशन का बीज तैयार कर चुकी हैं। नाबी के खेतों के अलावा उन्होंने इस किस्म को चप्पड़चिड़ी में एक किसान के खेत में भी लगाया था। इसका उत्पादन भी आम गेहूं के लगभग बराबर है।

डॉ. गोयल ने बताया कि उन्होंने इस काम को करने का डिसिजन जापान में रिसर्च करते हुए ही ले लिया था। इसलिए भारत लौटते हुए वह क्रॉस ब्रीडिंग के लिए प्लांट मटीरियल लेकर आई थीं। इन दिनों दुनिया भर में ऐसा अनाज पैदा करने का काम चल रहा है जिसमें आयरन, जिंक और विटामिन हों ताकि कुपोषण दूर हो सके। नॉर्थ इंडिया के खाने में 60 फीसदी हिस्सा गेहूं का ही है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश की ये मुख्य फसल है। इसलिए उन्होंने गेहूं पर ही काम करने का डिसिजन किया। नई किस्म और आम गेहूं की प्रोडक्शन में कोई अंतर नहीं है। इसका उत्पादन 4.8 टन प्रति हेक्टेयर तक है।